शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अनतिख्यात लेखक परम्परा में आचार्य पुंजराज

गिरिजा कुमारी (शोधार्थी)
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

काव्यशास्त्र की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। काव्यशास्त्रीय विषयों रस, अलंकार, रीति आदि तत्वों को आधार बनाकर ईसा पूर्व शताब्दियों से ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की जाती रही है। काव्यशास्त्र के आचार्यों की परम्परा में भरत, भामह, रुद्रट, वामन, मम्मट, आनन्दवर्धन पण्डितराज जगन्नाथ आदि अग्रगण्य हैं। इन्होंने महत्त्वपूर्ण काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना की। यथा - भरत का नाटयशास्त्र, भामह का काव्यालंकार, दण्डी का काव्यादर्श, आनन्दवर्धन का ध्वन्यालोक, कुन्तक का वक्रोक्तिजीवितम, भोज का श्रृंगारप्रकाश इत्यादि अमूल्य अलंकार ग्रन्थ हैं। अनतिख्यात लेखकों की एक विस्तृत परम्परा अनुसंधान एवं मूल्यांकन के अभाव में संस्कृत पाठकों की दृष्टि में ही अज्ञात है। ऐसी ही एक कृति है- शिशुप्रबोधकाव्यालंकार। जिसके प्रणेता हैं - पुंजराज। शिशुप्रबोधकाव्यालंकार काव्यशास्त्र की दृष्टि से उपयोगी ग्रन्थ है। प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य पुंजराज के ग्रन्थ पर चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ लेखन की परम्परा सत्रहवीं शती के पण्डितराज जगन्नाथ तक अविरल अविच्छिन्न रूप में दिखाई देती है, किन्तु यह काव्यशास्त्र के प्रगति भाग का स्वल्प अंश है, जो प्रकाश में आया और अध्ययन-अध्यापन की परम्परा से जुडा है। काव्यशास्त्रीय लेखकों के द्वारा रचित अनेक रचनायें वर्तमान समय में भी पाण्डुलिपियों के रूप में 'ओरिएण्टल इंस्टीट्यूट बडौदा', 'भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना' तथा 'इण्डिया ऑफिस ब्रिटेन' आदि शोध भाण्डागारों में संचित हैं। शनैः-शनैः प्राच्यविद्याविशारदों द्वारा यदा-कदा उनका प्रकाशन भी हो रहा है। आचार्य पुंजराज के ग्रन्थ 'शिशुप्रबोधकाव्यालंकार' का प्रथम संस्करण 'ओरिएण्टल इंस्टीट्यूट बडौदा' से 1965 में बी. एल. सम्भोग्यु द्वारा प्रकाशित किया गया। यह ग्रन्थ स्थूल रूप से तीन भागों में विभक्त है- कारिका, वृत्ति और उदाहरण। इसमें आठ अध्याय हैं। आचार्य पुंज ने मुख्यतः काव्यस्वरूप, दोष, गुण और अलंकारों को ही प्रमुख विवेच्य बताया हैं। पुंजराज अनतिख्यात लेखकों की परम्परा में आते हैं।

पुंजराज का व्यक्तित्व

पुंजराज के जीवनवृत्त के विषय में इतिहासग्रन्थों[1] पुस्तक सूचियों[2] और स्वरचित ग्रन्थ की पुष्पिकाओं[3] से अति संक्षेप में ही जानकारी मिलती है। पुंजराज विरचित 'शिशुप्रबोधकाव्यालंकार' के प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका तथा 'सारस्वत-प्रक्रिया-टीका' की प्रशस्ति में इनके वंश आदि का संक्षेप में बोध होता है। पुंजराज मालाबार के श्रीमाल परिवार के आभूषण स्वरूप थे। श्रीमाल वंश के जैन होने की सम्भावना

व्यक्त की गई है, परन्तु ग्रन्थकार ने मंगलाचरण में गणपति और सरस्वती वन्दना करके निराकरण कर दिया हैं कि वे वैष्णव थे।[4] इनके पिता का नाम जीवन (जीवनेन्द्र) तथा माता का नाम मकू था। वह धनी और ज्ञानी परिवार से सम्बद्ध रखते थे। उन्होंने अपने वंश का परिचय सारस्वत-प्रक्रिया-टीका की प्रशस्ति में दिया है-

हिमालयादा मलयाचले यो विशोभयामास महीं यशांभिः।
आसीन्नृपालस्पृहणीयसम्पद् साधुः स देपाल इति प्रसिद्धः।
आर्येषु वर्यः परकार्यधुर्युः स्मर्यः सतां पौरसरोजसूर्यः।
तत्सूनुरौदार्यनिधिबभूव कोराभिधो दुर्ह्रदवार्यधैर्यः।।
सत्सेवितो ललितलक्षणकान्तमूर्तिराषाप्रसादनकरः सदनं कलानाम् ।
जैवातृकः कुवलयप्रथितोपकारः पापाभिधान उदियाय ततो नृसोमः।।
प्रथितविपुलश्री श्रीमालान्ववायविषेषकः।
सकलजगतीजाग्रत्कीर्तिः सुधीरनसूयकः।।
अमितविभवो गोवासाधुस्ततोऽजनि जानकी।
रमणचरणप्रेमानन्दादुदंचितसात्विकः।।
तत्सुतः सुकृतशोभितसंपत्प्रीणितावनिवनीपक आसीत् ।
वैभवैऽप्यविकृतो भुवि मूर्तः पुण्यरशिरिव पापचसाधुः।।
अभूतकुटुम्बस्थितिभारधारिणी मदी यदीया सहधर्मचारिणी।
सदान्नदानव्रतदीक्षया जनं कुशेशयाकारशया पुपोष या।।
तदन्नन्दन्नो सुमतिसाधितपौरुषार्थावापन्मग्नजनतोद्धरणे समर्थौ।
ख्यातौ गुणैर्जगति जीवनमेघसञ्ज्ञावाज्ञावषीकृतनृपौ सकृपावभूताम् ।।
पतिव्रता जीवनधर्मपत्नी धन्या मकूनाम् कुटुम्बमान्या।
श्री पुञ्जराजाख्यमसूत पुत्रं मुञ्जं च तैस्तैश्चरितैः पवित्रम् ।।[5]

मेघ के पश्चात पुंज को मंत्री पद पर नियुक्त किया गया तथा उन्हें भी 'मफर-उल-मलिक' की उपाधि दी गई।[6] कुछ समय बाद पुंजराज स्वयं मालवा के राजा हुए। तब मंत्री का पद मुंज उनके छोटे भाई ने सम्भाला। पुंजराज ने कुछ समय पश्चात संन्यास धारण कर लिया तथा राजकार्य कनिष्ठ भ्राता मुंज को सौंपकर वनगमन किया। तत्पश्चात विद्याध्ययन एवं तपस्या में जीवन व्यतीत करने लगे। पुंज राजा, कवि, विद्वान, परोपकारी के रूप में प्रसिद्ध हुए -

अनुजे गुणवत्युदारचरिते गुरुदेवद्विजभक्तिभाजि मुञ्जे।
य उपाहितराजकार्यभारः प्रभूतासौख्यमनाकुलं विभर्ति।।[7]

मालवा का शासक ग्यासुद्दीन खिलजी पुंज का आश्रयदाता था। उसका काल 1469 से 1500 माना जाता है। 'शिशुप्रबोधकाव्यालंकार' के अन्त में प्रस्तुत प्रशस्ति तथा सारस्वत-प्रक्रिया-टीका की प्रशस्ति (जो विमलकीर्ति द्वारा विरचित है व शिशुप्रबोधकाव्यालंकार के अन्त में प्रकाशक द्वारा संलग्न की गई) में

उल्लेख किया है। ग्यासुद्दीन एक पराक्रमी सम्राट था। वह सत्यवादी तथा यशस्वी था। वह उदार शासक था तथा समय-समय पर श्रेष्ठ कार्यों के लिए उपाधियाँ भी प्रदान करता था-

क्षोणीमण्डनमण्डपाभिधमहादुर्गाऽधिनायोल्लासः।
च्छ्रीमत्साहिगयासद्दीनखलची राजेन्द्रचूडामणेः।।
यो मंत्रित्वमुपेत्य सत्यवचनो विश्व विवश्वानिव।
व्याप्नोति प्रसभं प्रतापमहसा पदयोद्यत्करः।।[8]

दधदपि परमेकः सर्वसौराज्यभारं, न हि भवति कदाचितव्द्याकुलः कार्यसिद्धौ।
इति नृपतिग्यासस्वामिना स्नेहभावा, न्मफरलमलिकाख्या साधु यस्य व्यधायि।।[9]

पुंजराज मालवा के शासक (1469-1500) ग्यासुद्दीन के मंत्री थे। अतः इससे पुंजराज का ऐतिहासिक व्यक्ति होना प्रमाणित है। इतिहासकारों के अनुसार- 'सुल्तान महमूद की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र ग्यासुद्दीन शाह विरुद धारण करके मालवा के सिंहासन पर बैठा। वह परिपक्व अनुभवी व्यक्ति था। उसकी इच्छा थी कि उसकी प्रजा तथा उसका राज्य शान्ति, समृद्धि और सम्पन्नता का उपभोग करें। जिससे सभी सुखी जीवन व्यतीत करें। उसकी इस नीति के फलस्वरूप मालवा ने उसके शासन काल में शान्ति का उपभोग किया और जनता आर्थिक व्यवसायों में लगी। उसका शासन समृद्धि का युग था। उसने जैनियों को शासन में सम्मिलित करने तथा उपाधियाँ देने की परम्परायें बनाये रखी। इस प्रकार मुंजराज (मुंज) अथवा पुखराज (पुंज) को 'मफर्रिहुल मुल्कं और सग्राम सिंह सोनी को 'नक्दुल मुल्कं की उपाधि दी गई। मालवा के इन शासकों की नीतियों व कार्यों से हिन्दु-मुस्लिम सद्भाव को बल मिला और दोनों एक-दूसरे के निकट आये। पुंजराज का व्यक्तित्व - पुंजराज के व्यक्तित्व की छाप मूलतः तीन रूपों में स्पष्ट होती है-मंत्री, राजा तथा कवि-विद्वान।

मंत्री के रूप में - पुंजराज उच्च कोटि के विद्वान थे। वे कर्तव्यनिष्ठ थे तथा श्रेष्ठ कार्यों में सदैव तत्पर रहते थे। अतः उन्हें श्रेष्ठ कार्यों के कारण ही मालवा के शासक ग्यासुद्दीन खिलजी ने 'मफरल-उल-मलिक' की उपाधि से सम्मानित किया।

अनुजे गुणवत्युदारचित्ते गुरुदेवद्विजभक्तिभाजि मुंजे।
य उपाहितराजकार्यभारः प्रभुतासौख्यमनाकुलं विभर्ति।।[10]

समस्त साम्राज्य का भार वहन करते हुए भी कभी कार्यसिद्धि के लिए व्याकुल नहीं होते थे

दधदपि परमेकः सर्वसौराज्यभारं, न हि भवति कदाचिव्द्याकुलः कार्यसिद्धौ।
इति नृपतिगयासस्वामिना स्नेहभावा, न्मफरलमलिकाख्या साधुः यस्य व्यधायि।।[11]

राजा के रूप में - पुंजराज राजा के रूप में दानी और धर्मात्मा थे। वह समय-समय पर दुर्भिक्ष आदि से पीडित प्रजा के दुःखों का षमन करता था तथा तुलादान आदि से दीन-हीन प्रजा का उपकार करता था-

तुलादिदानैर्दवयन् दारिद्रयं विद्वदास्पदात्।
य आपन्नर्तिशमनैस्तनोति विमलं यशः।।[12]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वह अतिसुन्दर, सद्गुणी, प्रजारंजन, यशस्वी और युद्धधुरीण के रूप में ख्यात था। उसकी सभा में दूरदूर से राजा, महाराजा, सामन्त, मण्डलेष्वर आकर सभा को अलंकृत करते थे। लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती थी-

जयति मदनमुद्रः सज्जनः प्रेमसान्द्रः,सुगुणमणिसमुद्रः कीर्तिविद्योतचन्द्रः।
नयविनयविनिद्रः पुण्यलक्ष्मीसमुद्रः, समरसमयरुद्रः पुंजराजो नरेन्द्रः।।
यस्या भाति सभा तिंरस्कृतमदप्रहवप्रभावोद्धुर।
क्षोणीमण्डनमण्डलेश्वरमहाराजन्यमान्यान्विता।।
विद्यावृन्दविनोदमोदविभवद्रोमाञ्चविद्वद्वचो।
जाग्रद् रपसरस्वतीनिवसतिर्लक्ष्मीविलासायिता।।[13]

वह कामशास्त्र में वर्णित 64 कलाओं तथा समस्त शास्त्रों के तत्त्ववेत्ता थे। वह सदैव विद्वानों के अभिनन्दन हेतु तत्पर रहते थे। वह शत्रुओं की पृथ्वी को पराक्रम से आक्रान्त कर शत्रुपत्नियों के नेत्रों को अश्रुपूरित करने वाले थे। अर्थात् वे साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण कर साम्राज्य विस्तार करते थे। वे महत्वाकांक्षी थे-

विबुधानभिनन्दतो विपक्षक्षितिभृज्जातपराक्रमस्य यस्य।
उदयद्युधि चापमाशु शंसत्यरिनारीनयनेषु भूरि वर्षम् ।[14]

कवि-विद्वान के रूप में - वे उच्चकोटि के विद्वान थे। सरस्वती सदैव उनके मुख पर विराजमान रहती थी। शिशुप्रबोधकाव्यालंकार में प्रस्तुत उद्धरणों से ज्ञात होता हैं कि वे कामशास्त्र में वर्णित 64 कलाओं तथा समस्त शास्त्रों में निपुण थे। श्री भारती सदैव उन पर प्रसन्न रहती थी। पुंजराज आस्थावादी तथा धर्म सहिष्णु थे। उन्होंने शिशुप्रबोधकाव्यालंकार का आरम्भ 'श्री गणेशाय नमः', 'श्री सरस्वत्यै नमः' पंक्तियों के बाद गणपति वन्दना से किया है। जिससे उनके शैव अथवा शाक्त होने का प्रमाण है-

गन्धर्वैरूपगीयमानचरितः प्रीत्या मिलल्लोचनो।
लीलाचंचलकर्णतालचकितामुड्डीय कुम्भस्थलात् ।।
व्यालीनां भ्रमरावलीं विदुतलेऽलंकाररूपां दधत् ।
कस्तूरीतिलकोपमां स जयति श्रीमान् गणानां पतिः।।[15]

प्रत्येक कवि काव्य की निविघ्न समाप्ति के लिए प्रयत्न करता है और लेखक ने भी ग्रन्थारम्भ में गणपति पूजा निर्विघ्न समाप्ति के लिए तथा सरस्वती पूजा प्रतिपाद्य विषय की स्फुटता के लिए की है। जैसे दशरूपक का प्रारम्भ गणपति पूजा तथा काव्यप्रकाश का प्रारम्भ वाग्देवता की पूजा से दिखाई देता हैं-

ग्रन्थारम्भे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत् परामृशति।।[16]

ग्रन्थ के आरम्भ में इन पंक्तियों के पूर्व 'ॐ' ओंकार अक्षर का भी निवेश किया है, जिससे कतिपय विद्वान् इनके जैन होने की सम्भावना व्यक्त करते हैं। उन्होंने शिशुप्रबोधकाव्यालंकार की प्रशस्ति और प्रत्येक अध्याय के अन्त में प्रस्तुत पुष्पिका में भी श्रीमाल का उल्लेख किया है। वे अपने शासक ग्यासुद्दीन खिलजी के प्रति भी आस्थावान थे।

पुंजराज का कृतित्व

सारस्वत-प्रक्रिया-टीका - पुंजराज काव्यशास्त्र के ज्ञाता ही नहीं अपितु उच्चकोटि के वैयाकरण थे। सारस्वत व्याकरण को सरल बनाने के लिए उन्होंने टीका लिखी, जिसे सारस्वत-प्रक्रिया-टीका कहा गया। Encyclopedic dictionary of Sanskrit literature में जे.एन.भट्टाचार्य एवं नीलांजन सरकार ने उल्लेख किया हैं कि 'पुंजराज (1500 सदी) एक वैयाकरण और टीकाकार थे।[17] वे मालवा के शासक ग्यासुद्दीन खिलजी के मंत्री थे। उन्होंने अनेक टीकाएं लिखी। वे सारस्वत सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे। 'गायकवाड ओरिएण्टल सीरीज नं. 134 की। A dictionary of Sanskrit grammar में डॉ.एस अभ्यंकर ने दो पुंजराजों का उल्लेख किया है।[18] जिसमें प्रथम पुंजराज वाक्यपदीय के टीकाकार हैं तथा द्वितीय भामह इत्यादि के समान काव्यशास्त्री। मोनियर विलियम ने भी Hindi-English-Dictionary में उल्लेख किया है कि पुंजराज सारस्वत-प्रक्रिया-टीका के टीकाकार तथा वैयाकरण थे।[19]

Systems of Sanskrit grammar में एस.के.बावेलकर कहते हैं कि 'ग्यासुद्दीन खिलजी ने सारस्वत व्याकरण को बढावा दिया क्योंकि यह व्याकरण सीमित होते हुए भी प्रभावशाली थी। पुंजराज द्वारा विरचित 'ध्वनि-प्रदीप' काव्यशास्त्र का एक दुर्लभ ग्रन्थ है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है इस ग्रन्थ में ध्वनि तत्त्व पर विचार किया गया हैं। पुंजराज शिशुप्रबोधकाव्यालंकार के प्रथम अध्याय में ध्वनि-प्रदीप का उल्लेख स्वरचित ग्रन्थ के रूप में करते हुए कहते हैं -

इह पुनः शब्दार्थयोर्लाक्षणिकलक्ष्यव्यंग्यभेदनिरूपणमप्रगल्भधियामुद्वेगदायीत्युपेक्षितमस्मद्विरचिते 'ध्वनि-प्रदीप' द्रष्टव्यम्।[20]

इसकी जानकारी 'न्यू केटेलागस् केटेलागोरम् से प्राप्त होती हैं।[21] सुशील कुमार डे द्वारा लिखित 'संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास' में भी इसका उल्लेख किया गया है।[22] शिशुप्रबोधकाव्यालंकार की भूमिका में भी बी.एल.सम्भोग्यु ने स्वयं लिखा है कि - 'यदि ध्वनि-प्रदीप उपलब्ध होता तो पुंजराज की उच्च काव्यशास्त्रीय उपलब्धियों को प्रकाशित करना सरल होता।

शिशुप्रबोधकाव्यालंकार - शिशुप्रबोधकाव्यालंकार पुंजराज द्वारा विरचित काव्यशास्त्र का ग्रन्थ है। ग्रन्थ को स्थूल रूप से तीन भागों में बाँटा गया हैं। यह ग्रन्थ आठ भागों में विभक्त हैं। यथा - प्रथमाध्याय - काव्यस्वरूपनिरूपणम्, द्वितीयाध्याय - शब्ददोषनिरूपणम्, तृतीयाध्याय - दोषनिरूपणम्, चतुर्थाध्याय - वाक्यार्थदोषनिरूपणम्, पंचमाध्याय - शब्दगुणनिरूपणम्, षष्टाध्याय - अर्थगुणनिरूपणम्, सप्तमाध्याय - शब्दालंकारनिरूपणम्, अष्टमाध्याय - अर्थालंकारनिरूपणम्।

शिशुप्रबोधकाव्यालंकार की पाण्डुलिपि Govt. Mss. Lib. Bhandarkar O.R. Institute Pune (india) में संरक्षित है। इस पाण्डुलिपि का सम्पादन 1965 में बी.एल.सम्भोग्यु द्वारा किया गया। जिसका प्रकाशन मार्च 1965 में 'महाराज सियाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा के निदेशक डॉ. भोगीलाल जे. संदेसारा द्वारा 'ओरिएण्टल इंस्टीट्युट, बडौदा द्वारा कराया गया। वर्तमान समय में भी संस्कृत साहित्य की कोटि पाण्डुलिपियाँ अनुसंधान की प्रतीक्षा में हैं। आचार्य पुंज के समान हमारे संस्कृत साहित्यकारों ने अमूल्य ग्रन्थ-रत्नों की रचना की जो आज शोध की अपेक्षा रखते हैं।

सन्दर्भ

1 (Dr.). P.V. Kane, *History of Sanskrit poetics,* pg. 425

2 Theodor Aufrecht *Catalogus catalogorum* -vol ii, pg. 656

3 *सारस्वतप्रक्रियाटीका.प्रशस्ति-* श्लोक संख्या- 15 पृष्ठ 78

4 *गन्धर्वैरुपगीयमानचरितः प्रीत्या मिल्लोचनो*
लीलाचंचलकर्णतालचकितामुड्डीय कुम्भस्थलात् ।
व्यालीनां भ्रमरावलीं विदु तलेऽलंकाररूपां दधत्
कस्तूरीतिलकोपमां स जयति श्रीमान् गणानां पतिः।।शिशुप्र. (पुंजराज) पृष्ठ 1

5 पुंजराज *सारस्वतप्रक्रियाटीका प्रशस्ति,* श्लोक संख्या- 2-12, पृष्ठ 78

6 मो. हबीब, *दिल्ली सल्तनत भाग-2,* पृष्ठ 171

7 पुंजराज, *सारस्वतप्रक्रियाटीका प्रशस्ति,* श्लोक सं.- 15 पृष्ठ 78

8 *वही, 14, पृष्ठ 78*

9 पुंजराज *शिशुप्र.प्रशस्ति,* श्लोक सं.-10, पृष्ठ 77

10 पुंजराज *सारस्वतप्रक्रियाटीका प्रशस्ति,* श्लोक सं. 15, पृष्ठ 78

11 पुंजराज, *शिशुप्र.प्रशस्ति,* श्लोक सं.-10 पृष्ठ 77

12 *वही,* श्लोक सं.-12 पृष्ठ 76

13 पुंजराज, *सारस्वतप्रक्रियाटीका प्रशस्ति,* श्लोक सं. 14, पृष्ठ 78

14 श्लोक सं. 20, पृष्ठ 78

15 पुंजराज, *शिशुप्र.* 1/1 पृष्ठ 1

16 मम्मट, *काव्यप्रकाश*, 1/1, पृष्ठ 1

17 J.N. Bhattacharya & Nilanjana Sarkar, Encyclopeadic dictionary of Sanskrit literature,. Pg 1138

18 Dr.S..Abhyankar, A dictionary of Sanskrit grammar, Pg..234

19 Monier William, *Sanskrit -english-dictionary*, Pg. 631

20 पुंजराज, *शिशुप्र.* 1, पृष्ठ 3

21 V.Raghavan, *New catalogus catalogorum*, vol-ix Pg..338

22 एस.के.डे, *संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास,*. पृष्ठ 338

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 आचार्य पुंज, *शिशुप्रबोधकाव्यालंकार*

2. एस.के.डे, *संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास* (प्रथम खण्ड)

3. धनंजय, *दशरूपकम्*

4. मम्मट, *काव्यप्रकाश*

5. Dr.P.V.Kane, *History of Sanskrit Poetics*
6. S.Abhyankar, *A Dictionary of Sanskrit Grammar*
7. Theordor Aufrecht, *Catalogues Catalogorum*
8 J.N.Bhattacharya & Nilanjana Sarkar, Editor : .*Encyclopeadic Dictionary of Sanskrit literature* Vol-IV-